SALTOC Project
Title: Madhumatī
Imprint: Udayapura: Rājasthāna Sāhitya Akādamī

OCLC: 3195624
Volume 47, no. 1 (January 2007)

TOC supplied by: Yale University Library

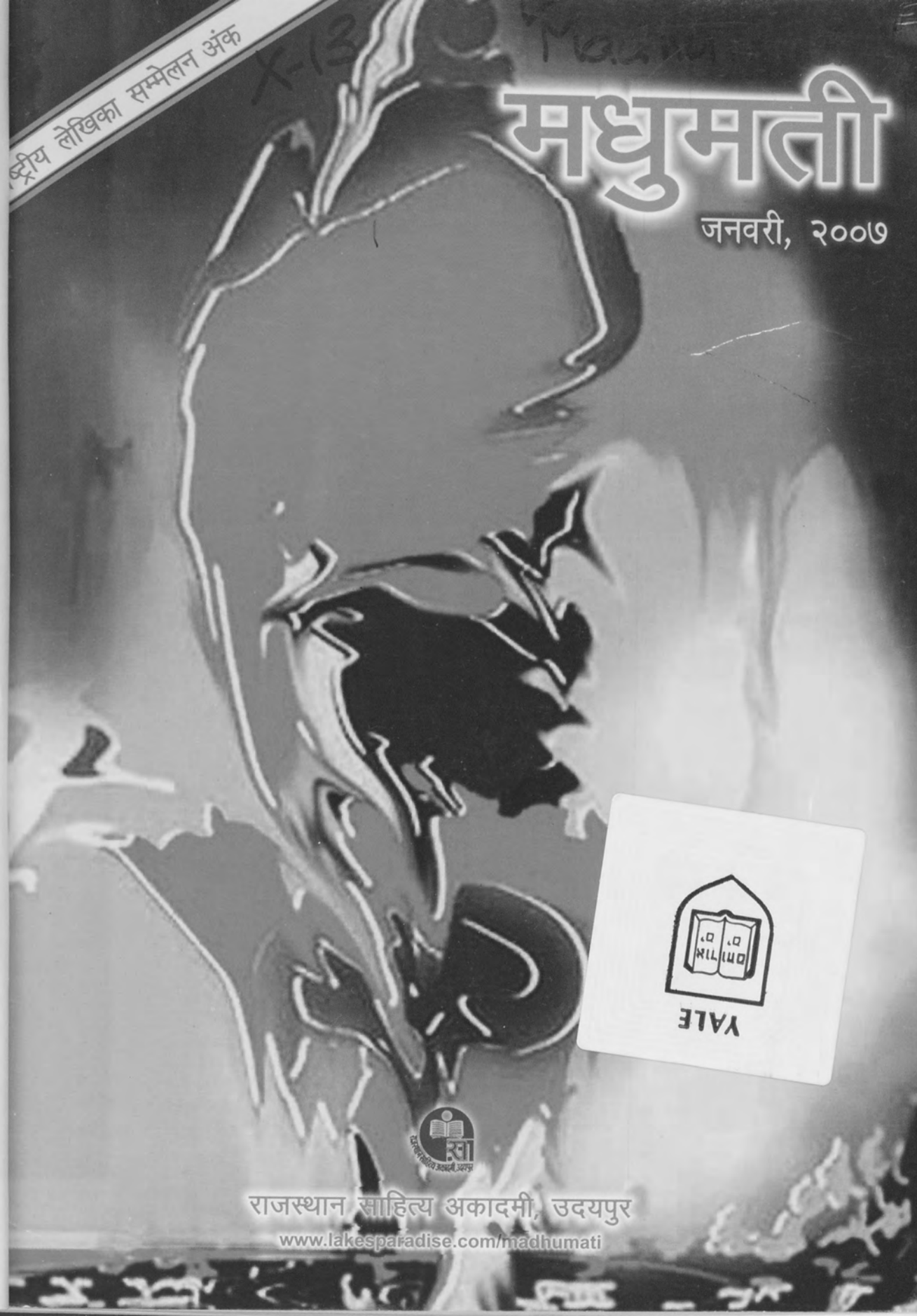

राष्ट्रीय लेखिका सम्मेलन

१६-१७ दिसम्बर, २००६

शुभारम्भ समारोह

दीप प्रज्वलन
डॉ. चित्रा मुद्गल,
अकादमी अध्यक्ष
डॉ. अजित गुप्ता एवं
श्रीमती मृदुला सिन्हा

शुभारम्भ समारोह में
स्वागत उद्बोधन देते
अकादमी अध्यक्ष
डॉ. अजित गुप्ता

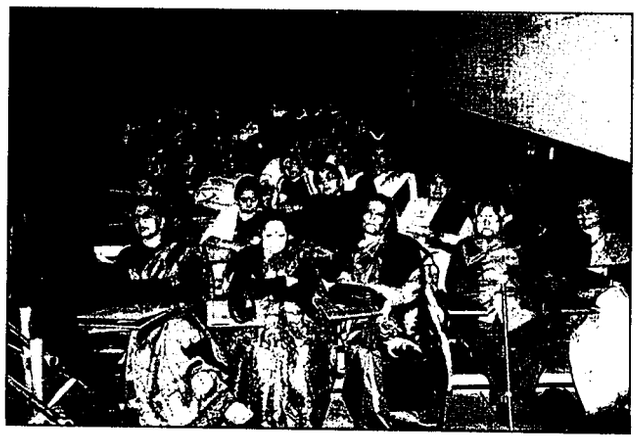

सम्मेलन में उपस्थित
संभागी लेखिकाएँ

मधुमती

सम्पादक

डॉ. (श्रीमती) अजित गुप्ता

राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिका
वर्ष 47 : अंक 01 : जनवरी, 2007

मासिक

मधुमती

वर्ष 47 : अंक 01 : जनवरी, 2007

प्रकाशक :

सचिव
राजस्थान साहित्य अकादमी
सेक्टर–4, हिरण मगरी,
उदयपुर (राज.) – 313002
दूरभाष : 0294–2461717
www.lakesparadise.com/Madhumati

प्रबन्ध सम्पादक :
डॉ. प्रमोद भट्ट

प्रबन्ध सहयोग :
दुर्गेश नन्दवाना
प्रकाश नेभनानी

आवरण
भावना वशिष्ठ, 44, सुथारों की घाटी, भट्टियानी चौहट्टा, उदयपुर – 313001

मूल्य : 10 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक : 100 रुपये

(वार्षिक शुल्क केवल धनादेश, बैंक–ड्राफ्ट या नकद
सचिव, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के नाम से ही भेजें)

मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट, उदयपुर ✆ 2467046

मधुमती में प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से राजस्थान साहित्य अकादमी की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

सम्पादकीय

- अरण्य यात्रा / डॉ. अजित गुप्ता 5

लेख

- डॉ. रांगेय राघव : एक अद्वितीय उपन्यासकार / डॉ. देवेन्द्र मिश्र 9
- हिन्दीवीर अयोध्याप्रसाद खत्री / शिवशंकर मिश्र 13
- राष्ट्रवाद और भाषा / डॉ. दया प्रकाश सिन्हा 18
- समकालीन दोहा छंद : रंग और सुगंध / कुन्दन माली 23
- हिन्दी काव्य में ग़ज़ल / जहीर कुरैशी 27
- बांग्ला साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर : आशापूर्णा देवी / डॉ. (श्रीमती) बी.कार 30

कविता

- वृक्ष की नियति / डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध' 34
- छोटे–छोटे युद्ध, यक्षगान / नीता चौबीसा 35
- भारत का भाग्य, असमर्थ, ओढ़नी, इच्छा दमन / जयप्रकाश पुरोहित 37
- कुर्सी, कठपुतली / राजेन्द्र उपाध्याय 38
- सैनिक / शिवदानसिंह जोलावास 40
- चार कविताएँ / डॉ. हेमेन्द्र चण्डालिया 42
- नया साल / बलविन्द्र 'बालम' 45
- तीन कविताएँ / मालती शर्मा 46
- चार कविताएँ / चन्द्रदेव भारद्वाज 47
- लघु कविताएँ / डॉ. विनोद सोमानी 'हंस' 49
- तीन कविताएँ / जसविन्दर शर्मा 50
- तीन कविताएँ / डॉ. गीता सक्सेना 51
- दोहे / भगवानदास ऐजाज 53

कहानी

- प्रार्थना / डॉ. नरेन्द्र कोहली 54
- अहंकार / प्रेमकोमल बूंलिया 57
- काठ की चिड़िया / डॉ. भगवतीलाल व्यास 60
- सात चवन्नी / राजेन्द्र केडिया 63

गीत-ग़ज़ल

- दो गीत / दिनेश चन्द्र शर्मा 70
- चार गज़लें / डॉ. मदन केवलिया 72
- तीन गज़लें / डॉ. कमलेश शर्मा 74
- तीन गज़लें / डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 76

भाषान्तर

- गुजराती कविता / मूल – जगदीश जोषी, अनु. सदाशिव श्रोत्रिय 78

नाटक

- बाल की खाल / डॉ. अजय अनुरागी 80

व्यंग्य

- संत होने से पहले / सुदर्शन वशिष्ठ 94

साक्षात्कार

- रिज़वान जहीर उस्मान से कृष्ण कुमार आशु 97

राष्ट्रीय लेखिका सम्मेलन

आलेख

- हुए शूल अक्षत मुझे धूलि चन्दन ! / डॉ. नीरजा माधव 100
- सुभद्रा कुमारी चौहान : राष्ट्रप्रेम की पर्याय / डॉ. बीना शर्मा 106
- महिला लेखन की चुनौतियाँ / डॉ. सुमन बिस्सा 110
- वैश्वीकरण और महिला लेखन का बदलता स्वरूप / डॉ. रेणु शाह 116

प्रतिवेदन

- राष्ट्रीय लेखिका सम्मेलन 121

समीक्षा

- मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ / डॉ. मंजू चतुर्वेदी 126
- जलती शाम, तुम्हारी उपस्थिति में, बसंत के पार / डॉ. प्रभारानी गुप्ता 129

समाचार वीथी 131

पाठक संवाद 137

अरण्य यात्रा

डॉ. अजित गुप्ता

विगत कई रविवार साहित्यिक समारोहों की भेंट चढ़ गए, दिसम्बर मास का प्रथम रविवार घरेलू कार्यों के लिए सुरक्षित दिखायी देने लगा। कल्पनाएँ पैर पसारने लगीं, काम एक के बाद एक, बन्द दरवाजे खोल सामने आते चले गए। अभी कार्यों को सांत्वना देने का क्रम चल ही रहा था कि टेलीफोन की घण्टी घन–घना उठी। फोन पर उलाहना देते हुए एक आग्रह था, "तुम्हें बहुत दिन हो गए वनांचल में गए हुए, अतः क्या इस रविवार को हमारे साथ चल सकोगी।" कुछ आग्रह था, कुछ आदेश भी और कुछ वनांचल में जाने का अवसर भी, मैंने अपने कामों को पीछे धकेलते हुए उन्हें हाँ कर दी। दूसरे दिन ही रविवार था और प्रातः 10 बजे ही हमें बस द्वारा उदयपुर शहर से 45 कि.मी. दूर ऐसे वनांचल में जाना था, जहाँ वन नेस्तनाबूद कर दिए गए थे। चारों तरफ गोल–गोल पहाड़ों की शृंखलाएँ थीं, लेकिन वहाँ वृक्ष नहीं थे, पहाड़ों का तन भी ठोस नहीं था, वहाँ भुरभरी मिट्टी निकल आयी थी। बरसात खूब हुई थी तो घास भी बहुत हुई और पहाड़ियाँ लम्बी घास से लहलहा उठी थीं। इन पहाड़ों पर जब घास लहलहाती है, तब यह पूरा क्षेत्र स्वर्ग के समान सुंदर नजर आता है। दूर तक फैले पहाड़ और उन पर पसरी हरीतिमा, लगता है विशाल गोल्फ का मैदान है। दिसम्बर मास आते–आते हरी घास सूखने लगी और अब हरीतिमा के स्थान पर भूरापन पसरा हुआ था। गाँव में घास काटने का कार्य भी जोरों पर था तो कई पहाड़ घास–विहीन भी हो चले थे।

हमारी बस कभी पहले गीयर के साथ चलती और कभी दूसरे गीयर से। सड़क के किनारे कहीं बबूल थे तो कहीं महुआ। लेकिन कोई शाश्वत पहचान लिए खड़ा था, तो वह था पलाश, जिसे ढाक भी कहते हैं और टेसू भी। मैंने कहा कि देखो अभी हम ढाक को देख रहे हैं, जिसके लिए कहा जाता है कि 'वही ढाक के तीन पात'। क्योंकि अभी केवल हमें इसमें पत्ते ही पत्ते दिखायी दे रहे हैं। कुछ ही दिनों बाद बसन्त खिलेगा और ढाक के पत्तों का झड़ना शुरू होगा, तब चारों तरफ पलाश के फूल खिल उठेंगे और तब सारा वनांचल पलाशीय लालिमा से रँगा दिखायी देगा। जनवरी और फरवरी में खूब फूलेगा पलाश और जैसे ही फाल्गुन होली के रंगों को लेकर आ उपस्थित होगा, वैसे ही इसके फूल टेसू कहलाने लगेंगे और टेसू के रंग से होली के रंग बनने लगेंगे।

एक पहाड़ी, उसके बीचों-बीच एक पेड़ और पेड़ के नीचे सहारा लिए एक छोटी बालिका। पहाड़ों पर अक्सर बकरियाँ तो दिखायी देती हैं, लेकिन पहाड़ के एकांत में एक आठ-दस वर्ष की बालिका पेड़ के सहारे बैठी हुई थी जो मुझे मंत्र-मुग्ध कर गयी। यह दृश्य वहाँ आम है। बचपन बकरी चराते, खेतों में काम करते और पेड़ों पर चढ़कर ही बीतता है। बकरियाँ चरते-चरते ओझल हुईं तो पेड़ का सहारा लेकर सुस्ताने बैठ जाता है बचपन।

उस पहाड़ी क्षेत्र में सर्पिली सड़क हमारी बस को बल खा–खाकर ले जा रही थी। मेरी निगाह पहाड़ों के वीराने को देख रही थी। तभी अचानक मेरी निगाह थम गयी, एक पहाड़ी, उसके बीचों–बीच एक पेड़ और पेड़ के नीचे सहारा लिए एक छोटी बालिका। पहाड़ों पर अक्सर बकरियाँ तो दिखायी देती हैं, लेकिन पहाड़ के एकांत में एक आठ–दस वर्ष की बालिका पेड़ के सहारे बैठी हुई थी जो मुझे मंत्र–मुग्ध कर गयी। यह दृश्य वहाँ आम है। बचपन बकरी चराते, खेतों में काम करते और पेड़ों पर चढ़कर ही बीतता है। बकरियाँ चरते–चरते ओझल हुईं तो पेड़ का सहारा लेकर सुस्ताने बैठ जाता है बचपन।

पहाड़ों के चक्कर लगा–लगाकर आखिर हमारी बस एक पक्के भवन के सामने जाकर रुक गयी। चारों तरफ